

# डॉ. जॉर्ज पेटन, बाइबल अनुवाद, सत्र 2, बाइबल अनुवाद का परिचय, भाग 2

© 2024 जॉर्ज पेटन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉर्ज पेटन हैं जो बाइबल अनुवाद पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 2 है, बाइबल अनुवाद का परिचय, भाग 2।

नमस्ते, मैं जॉर्ज पेटन हूँ। मैं बाइबल अनुवाद पर श्रृंखला जारी रख रहा हूँ, और हम इस बारे में बात कर रहे हैं कि अनुवाद क्या है, इसका परिचय, और यह भाग दो है। और पिछली बार, हमने अनुवाद के बारे में बात की थी। अनुवाद क्या है? यह एक पाठ के अर्थ को एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित करना है।

हमने इस बारे में बात की कि अनुवाद और मौखिक रूप से व्याख्या करने में क्या अंतर है और उनमें से कुछ अंतर क्या हैं। और अब हम बाइबल अनुवाद के कुछ अन्य पहलुओं पर बात करेंगे। ठीक है, एक लेखिका हैं, जुलियाना हाउस, उन्होंने 2016 में एक किताब लिखी थी और यह एक बड़ी मोटी किताब है, अनुवाद पर लगभग एक इंच मोटी।

और उसने अलग-अलग विद्वानों से अनुवाद की कई परिभाषाएँ एकत्रित कीं, और उनमें से छह या आठ हैं, और वे सभी अलग-अलग हैं। और वे सभी इसे क्या कहते हैं, इस पर अपना-अपना दृष्टिकोण रखते हैं। और इसलिए इसे परिभाषित करना और अनुवाद की परिभाषा देना वाकई मुश्किल है।

लेकिन संक्षेप में, आइए कुछ मुख्य बातों के बारे में बात करें जिन पर हम सभी अनुवाद के बारे में सहमत हो सकते हैं, और हम प्रक्रिया के बारे में बात कर सकते हैं। और यह हमें अनुवाद क्या है, इसकी "शब्दकोश परिभाषा" के साथ आने के बजाय एक तस्वीर देता है। तो, आप स्रोत पाठ से शुरू करते हैं चाहे वह किसी भी भाषा में हो, और ST स्रोत पाठ है।

और फिर, आप उस स्रोत पाठ के अर्थ को लक्ष्य पाठ में स्थानांतरित करते हैं। और यह स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से आता है। और इसलिए, हम अर्थ को संप्रेषित करने के बारे में बात कर रहे हैं, हम समतुल्यता के बारे में बात कर रहे हैं, इसमें किसी प्रकार की समानता है, पाठ के लिए किसी प्रकार का उद्देश्य है, इसे किसी विशेष कारण से तैयार किया गया था।

इस पर कम से कम रोमन काल से ही हर युग में चर्चा होती रही है। होरेस एक विद्वान और वक्ता थे, और अनुवाद के बारे में उनके अपने विचार थे। अगर हम आगे बढ़ें, तो हम जेरोम के काम को देखेंगे जब उन्होंने लैटिन बाइबिल, वुल्गेट का लैटिन में अनुवाद किया था।

यह लैटिन में प्रचलित भाषा है, वुल्गेट। अनुवाद कैसा होना चाहिए, इस बारे में उनके अपने विचार थे। इसलिए इसे शब्द दर शब्द के बजाय अर्थ दर अर्थ होना चाहिए, सिवाय जब बात शास्त्रों की हो।

और वह धर्मग्रंथों का अनुवाद करने में बहुत सावधान थे। और उन्होंने कहा कि ग्रीक और हिब्रू में विराम चिह्न भी प्रासंगिक हैं। और वे हमें अर्थ के बारे में बताते हैं और हमें अर्थ स्थानांतरित करते समय उन्हें गंभीरता से लेने की आवश्यकता है।

और इसलिए यह द्वंद्व है, और इस द्वंद्व को हम शाब्दिक बनाम मुफ्त कहते हैं। और वे इस बात पर संघर्ष कर रहे हैं कि उन्हें जेरोम के समय से और उससे भी पहले शाब्दिक अनुवाद करना चाहिए या मुफ्त अनुवाद करना चाहिए। और इसलिए अगर आप इसे देखें, तो शाब्दिक का क्या मतलब है? मुफ्त का क्या मतलब है? दुर्भाग्य से, वे दोनों वास्तव में उपयोगी होने के लिए बहुत अस्पष्ट हैं।

इसलिए, जब हम शाब्दिक बनाम मुफ्त के इस द्वंद्व के बारे में बात करते हैं, तो यह किसी भी तरह से बहुत मददगार नहीं है। साथ ही, हम इसे हर जगह सुनते हैं। यह सर्वव्यापी है।

लेकिन साथ ही, भले ही यह मददगार न हो, लेकिन बातचीत शुरू करने के लिए यह एक शुरुआती बिंदु के रूप में उपयोगी है। और इसलिए यह कुछ ऐसा है जिस पर चर्चा की गई है। जब आप किसी उपन्यास का अनुवाद करते हैं, तो क्या उसे शब्दशः अनुवाद करना चाहिए, या उसे अर्थ के लिए अर्थ होना चाहिए? या उसे किसी तरह अर्थ के लिए अर्थ होना चाहिए? जब आप किसी कानूनी दस्तावेज़ का अनुवाद करते हैं, तो क्या उसे शब्दशः अनुवाद करना चाहिए या उसे अधिक अभिव्यंजक होना चाहिए? ये सभी प्रश्न अनुवाद शुरू होने से ही चल रहे हैं।

और वास्तव में पहली बार जब हमारे पास शास्त्रों का अनुवाद हुआ था, तब पुराने नियम का ग्रीक में अनुवाद किया गया था, और इसे सेप्टुआजेंट कहा जाता है, और इसका अनुवाद ईसा पूर्व 200-300 ईसा पूर्व से लेकर ईसा के समय तक किया गया था। सेप्टुआजेंट के अलग-अलग हिस्सों का निर्माण अलग-अलग लोगों ने किया था। इसलिए, शाब्दिक बनाम मुफ्त की यह पूरी बात भाषा के पक्ष की बात कर रही है।

यह इस बारे में बात कर रहा है कि अंतिम उत्पाद का स्वरूप मूल उत्पाद के स्वरूप जैसा दिखना चाहिए या नहीं। और आम तौर पर लोग यही मतलब निकालते हैं जब वे शाब्दिक बनाम मुफ्त कहते हैं। आप कभी भी एक भाषा और दूसरी भाषा के बीच शब्द-दर-शब्द अंतर नहीं कर सकते।

आप ऐसा नहीं कर सकते। यहां तक कि हमारी अंग्रेजी में लिखी गई सबसे शाब्दिक बाइबल भी ऐसा नहीं करती। और हम इसके कुछ उदाहरण देंगे।

लेकिन शाब्दिक अर्थ की यह पूरी बात भाषा के पक्ष में है, लेकिन फिर हम संस्कृति से संस्कृति के साथ भी संघर्ष करते हैं। मान लीजिए, आपके पास उत्पत्ति की पुस्तक का अनुवाद है जो इतिहास में एक विशेष समय अवधि में एक विशेष लोगों के लिए लिखी गई थी, और वे अपनी संस्कृति और अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में थे, उनके साथ जो कुछ हुआ, और उनकी अपनी सांस्कृतिक समझ, उनका विश्वदृष्टिकोण, उनके मूल्य, वे सभी चीजें उस पाठ से जुड़ी थीं क्योंकि जिन लोगों ने इसे लिखा था या जिस व्यक्ति ने इसे लिखा था वह उस समूह के लोगों, अपनी खुद की संस्कृति,

उसी भाषा और जनजाति के लोगों के लिए लिख रहा था। और इसलिए, जब हम जाते हैं और यह स्थानांतरण करते हैं, तो हमें मुश्किलें होती हैं क्योंकि हम उसी संस्कृति से नहीं आते हैं।

हम एक ही परिवेश, पूरे सामाजिक परिवेश से नहीं आते हैं। और इसलिए, जब हम अनुवाद के साथ आते हैं तो हमें उससे निपटना पड़ता है। इसलिए, हम केवल शब्दों का अनुवाद नहीं कर रहे हैं।

यह सिर्फ़ इस शब्द को उस शब्द के लिए यहाँ लाने या इस वाक्य को इस वाक्य के लिए यहाँ लाने का मामला नहीं है। यह वास्तव में इस बात पर निर्भर करता है कि हम स्रोत भाषा की दुनिया को कैसे चित्रित करते हैं और स्रोत पाठ को लक्ष्य भाषा में लक्षित पाठ में कैसे संप्रेषित किया जाता है। ये कुछ चुनौतियाँ हैं, और हम इन अलग-अलग विषयों को श्रृंखला के आगे बढ़ने के साथ चित्रित करेंगे।

ठीक है, जैसा कि हमने कहा, हमारे पास स्रोत पाठ है, और फिर हम स्रोत पाठ के अर्थ को लक्ष्य पाठ में अनुवाद करने का प्रयास कर रहे हैं। हाउस ने जो बातें सामने रखी हैं, उनमें से एक यह है कि आप हमेशा पीछे और आगे की ओर देखते रहते हैं। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि जब आप अनुवाद कर रहे होते हैं, तो आप उसका एक हिस्सा अनुवाद करते हैं, और फिर आप पीछे जाते हैं, और स्रोत पाठ को देखते हैं।

क्या मैंने वह हिस्सा सही समझा? तो, आप स्रोत पाठ पढ़ते हैं, आप लक्ष्य पाठ में जो लिखा है उसे पढ़ते हैं, और आप हमेशा आगे-पीछे जाते रहते हैं क्योंकि आप हमेशा यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हमने इसे अच्छी तरह से संप्रेषित किया है। क्या यह सटीक है? क्या इसका अर्थ आगे भी बना रहता है? और इसलिए हमेशा आगे-पीछे का यह संबंध होता है। अनुवाद में एक और बात जो कारक है वह यह है कि अनुवादित सामग्री के बारे में संस्कृति का दृष्टिकोण क्या है। क्या अनुवाद किसी तरह से गौण है? यह उन भाषाओं में विशेष रूप से सच है जिनकी भाषा और उनकी संस्कृति में साहित्य का इतिहास है, और उनके पास उस भाषा में अनुवादित चीजों का इतिहास है। और इसलिए, फिर सवाल यह है कि उस विशेष साहित्यिक प्रणाली में उस विशेष संस्कृति के स्थानीय लोग अनुवादित उत्पाद को कैसे देखते हैं? क्या यह गौण है? क्या यह कम गुणवत्ता वाला है? क्या यह घटिया है? हमारे मामले में, क्या अंग्रेजी बाइबिल ग्रीक या हिब्रू से कमतर है? इस बारे में सोचने की बात है।

चर्च में ज़्यादातर लोगों के बारे में आप क्या सोचते हैं? क्या वे वहाँ बैठकर सोचते हैं, काश, मेरे पास इस ESV की जगह ग्रीक होती, जिसे मैं देख रहा हूँ, या कुछ और? शायद नहीं। किसी तरह इन अलग-अलग भाषाओं में बाइबल, और यह अंग्रेज़ी में भी किया गया है, यह तब हमारी बाइबल बन जाती है। यह अंग्रेज़ी बाइबल है।

हम इसे अनुवाद नहीं मानते क्योंकि हम इसे बचपन से पढ़ते आ रहे हैं या हम इसे तब से पढ़ते आ रहे हैं जब हम ईसाई या आस्तिक थे। इसलिए हम इसे वैसे ही लेते हैं, स्वीकार करते हैं और इसे अनुवाद के रूप में नहीं देखते। बहुत से लोग ऐसा नहीं करते।

कुछ लोग ऐसा कर सकते हैं, लेकिन कई बार चर्च में आम लोग वहाँ बैठकर यह नहीं कहते कि, माफ कीजिए, पादरी, ग्रीक में ऐसा नहीं कहा जाता। नहीं, हम ऐसा नहीं देखते। क्योंकि आप वहाँ बैठते हैं और आप सुन रहे होते हैं कि पादरी क्या कहना चाह रहा है।

मेरे कुछ भाषाई छात्र, अनुवाद पाठ्यक्रम लेने के बाद कहते हैं, वास्तव में, कभी-कभी मेरे लिए पादरी की बात सुनना मुश्किल हो जाता है क्योंकि वे ग्रीक भाषा को गलत समझते हैं। और मेरे कुछ छात्र कभी-कभी कहते हैं कि अनुवाद पाठ्यक्रमों ने उनके बाइबल पढ़ने को बर्बाद कर दिया है। लेकिन आमतौर पर ऐसा नहीं होता है।

तो, हम किस बारे में बात कर रहे हैं? हम अर्थगत तुल्यता या अर्थ में तुल्यता के बारे में बात कर रहे हैं। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। और यह लेखिका, हाउस, इसे इस तरह से कहती है।

अनुवाद में, हम मूल और अनुवादित पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसमें हम इसका विश्लेषण करते हैं और मूल अक्षरों के विश्लेषण में पाए गए रूपों और कार्यों को व्यवस्थित रूप से जोड़ते हैं ताकि लेखक के मूल इच्छित उद्देश्यों और विकल्पों को प्रकट किया जा सके। अंततः, भाषाई अनुवाद विश्लेषण का उद्देश्य अनुवादक को अपने स्वयं के आधारभूत विकल्प बनाने के लिए सशक्त बनाना है। दूसरे शब्दों में, हम स्रोत पाठ, रूपों, उस भाषा में उन रूपों का उपयोग कैसे किया जाता है, इसे लिखने के लिए लेखक की प्रेरणा क्या है, लेखक के इरादे की पूरी बात का विश्लेषण करते हैं, और फिर हम उन्हें इस दूसरी भाषा में कैसे स्थानांतरित करते हैं।

तो, अनुवाद क्या है? अनुवाद पर वापस आते हुए, अनुवाद एक लिखित पाठ को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में स्थानांतरित करने की प्रक्रिया है जिसे अनुवादक या अनुवादकों द्वारा एक विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में किया जाता है, जिसका अर्थ है लक्ष्य भाषा के लोगों का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ। दूसरा, दूसरा, लिखित उत्पाद या लक्ष्य पाठ, जो उस प्रक्रिया से उत्पन्न होता है और जो लक्ष्य भाषा के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में कार्य करता है। क्षमा करें, पहला स्रोत पाठ का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ था।

नंबर दो लक्ष्य भाषा और लक्ष्य पाठ का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ है। फिर तीन संज्ञानात्मक, भाषाई, दृश्य, सांस्कृतिक और वैचारिक घटनाएँ हैं, जो नंबर एक और दो का अभिन्न अंग हैं। हमारा इससे क्या मतलब है? इसका मतलब है कि आपको वास्तव में सोचना होगा।

यह एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। यह भाषाई है। आप भाषा के बारे में सोचते हैं।

आप शब्दों के बारे में सोच रहे हैं। आप वाक्यांशों के बारे में सोच रहे हैं। और यह दृश्य है।

आप यह चित्र बनाने की कोशिश कर रहे हैं कि यह दूसरी संस्कृति कैसी है, उनसे संबंधित अर्थ क्या है, और फिर हमसे संबंधित अर्थ क्या है। और इसलिए, वहाँ संस्कृति है जो शामिल है। इसमें विभिन्न विचारधाराएँ शामिल हैं।

बाइबल में लोगों का विश्वदृष्टिकोण आज हमारे विश्वदृष्टिकोण से अलग है। आप उन अंतरों को कैसे पाटते हैं? यह सब वही है जिसे हम अनुवाद मानते हैं, स्रोत पाठ का लक्ष्य पाठ में अनुवाद

और फिर संज्ञानात्मक और भाषाई विशेषताएँ। इसलिए, अनुवाद के कुछ अलग-अलग प्रकारों की पहचान की गई है।

पहले प्रकार का अनुवाद अंतर-भाषिक होगा, जिसका अर्थ भीतर से होता है। और इसलिए यह उसी भाषा के भीतर है। अगर हमारे पास अंतर-भाषिक अनुवाद के उदाहरण हों तो क्या होगा? अंतर-भाषिक अनुवाद वह है जो आप तब करते हैं जब आप किसी चीज़ का अर्थ स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि आप किसी बच्चे से बात कर रहे हैं और वह आपसे पूछता है, इसका क्या मतलब है? फिर आपको इसे सरल भाषा में कहना होगा जिसका मतलब वही हो। कल, मेरी बहू हमारे तीन साल के पोते से बात कर रही थी, और उसने कहा, भगवान सर्वशक्तिमान है। और उसने पूछा, इसका क्या मतलब है? और इसलिए, उसने कहा कि इसका मतलब है कि भगवान सर्वशक्तिमान है।

यह अंतरभाषाई अनुवाद का एक उदाहरण है। जब आपके पास तकनीकी भाषा होती है, और आप इसे किसी ऐसे व्यक्ति को बताना चाहते हैं जो उस विशेष क्षेत्र में नहीं है, तो इसे एक अलग रूप में स्थानांतरित किया जाता है ताकि वे लोग इसे समझ सकें। विंडोज फॉर डमीज इसका एक उदाहरण होगा।

आपके पास ये टेक्नोक्रेट हैं, ये गीकी लोग हैं जो कंप्यूटर भाषा बोलते हैं और, माफ़ करें, क्या आप इसे अंग्रेज़ी में बोल सकते हैं? और इसलिए, यह अंतर-भाषाई अनुवाद का एक उदाहरण होगा। अंतर-भाषाई वह है जिसके बारे में हम दो अलग-अलग भाषाओं के बीच सबसे ज्यादा सोचते हैं। और हम अपना ज्यादातर समय उसी पर बिताएँगे, लेकिन मैं एक तीसरे का जिक्र करना चाहता हूँ और वह है अंतर-सेमिओटिक।

और सांकेतिकी का अर्थ है संकेत या प्रतीक और संकेतों और प्रतीकों की एक प्रणाली। और इसलिए जब आप किसी चीज़ को एक संकेत प्रणाली से दूसरी संकेत प्रणाली में अनुवाद करते हैं तो आप क्या करते हैं? उदाहरण के लिए, मौखिक रूप से बोलते हुए, ध्वनि तरंगें एक संकेत प्रणाली है और हर भाषा अलग है और इसलिए वे ध्वनि तरंगों का अलग-अलग तरीके से उपयोग करते हैं। लिखित वर्णमाला के साथ भी यही बात है।

लिखित वर्णमाला एक अलग संकेत प्रणाली है जो विचारों को संप्रेषित करती है। इसलिए, यह ध्वनि तरंग प्रणाली को लेती है और इसे इस विशेष भाषा के लिए प्रतीकों का उपयोग करके लिखित प्रणाली में डालती है। तो हम इसी बारे में बात कर रहे हैं।

लेकिन कुछ मायनों में, हम लिखित पाठ को बोलचाल में डालने या किसी बोले गए पाठ को बोलचाल में लिखने के बारे में बात कर रहे हैं। आइए हम अंतर-सेमिओटिक की अपनी समझ और अवधारणा को व्यापक बनाएं। एक किताब के बारे में क्या जो एक फिल्म में सेट है? यह कई अलग-अलग स्तरों पर अंतर-सेमिओटिक है।

या किसी खास किताब की नाट्य प्रस्तुति। या ब्रॉडवे पर किसी खास नाटक का नाटक जिसे बाद में फिल्म में बनाया जाता है। या आप कोई ऐसी किताब ले सकते हैं जो उसमें शामिल हो।

गानों के बारे में क्या? खास विषयों के गाने। तो हमारे पास अंतर-सेमिओटिक अनुवाद करने के बहुत से तरीके हैं। आजकल, हम आम तौर पर इसे अनुवाद नहीं मानते, लेकिन एक अर्थ में, यह वास्तव में अनुवाद ही है।

इसलिए यदि आप एक फ्रांसीसी उपन्यास लेते हैं और आप अंग्रेजी में एक फिल्म बनाते हैं, तो यह भाषा के हिसाब से अनुवाद है, साथ ही संकेत प्रणाली भी है। तो, यह लिखित से लेकर फिल्म, वीडियो तक है। इसलिए, इस तरह की अनुवाद प्रक्रियाएँ बाइबल अनुवाद के लिए भी प्रासंगिक हैं।

और हम बाइबल अनुवाद मंडलियों में इसे वह सामग्री कहते हैं जिसका उपयोग पवित्रशास्त्र संलग्नता के लिए किया जाता है। पवित्रशास्त्र संलग्नता से हमारा क्या मतलब है? पवित्रशास्त्र संलग्नता: हम चाहते हैं कि लोग बाइबल की विषय-वस्तु से जुड़ें। हम चाहते हैं कि लोग अपनी बाइबल पढ़ने में संलग्न हों।

तो, आप किस तरह की चीजों के साथ बड़े हुए हैं जो बाइबल नहीं हैं, लेकिन वे ऐसी चीजें हैं जो बाइबल के बारे में हैं? क्या किसी ने बच्चों के लिए बाइबल की कहानियों की किताबें देखी हैं? सब्जी की कहानियाँ, वीडियो, बच्चों के गाने। मैं यह कहता हूँ, और कभी-कभी युवा लोग नहीं जानते कि मेरा क्या मतलब है, लेकिन फ्लेनेल ग्राफ़। फ्लेनेल ग्राफ़ तब होता है जब आपके पास फ्लेनेल कपड़े का एक टुकड़ा होता है, और फिर आपके पास उसी कपड़े से काटे गए छोटे अक्षर होते हैं, और फिर आप इसे वहाँ चिपका देते हैं, और फिर शिक्षक एक पाठ पढ़ाता है।

बाइबल अध्ययन पवित्रशास्त्र से जुड़ी सामग्री होगी। बाइबल अध्ययन बच्चों के लिए है, और बाइबल अध्ययन वयस्कों के लिए है। फिर से, फिल्में।

यीशु पर बनी फिल्म एक होगी। और आज क्या चल रहा है? आज कौन सी टीवी सीरीज चल रही है? चुना हुआ। चुना हुआ शास्त्र से जुड़ा हुआ है।

चुना हुआ अंतर-लाक्षणिक अनुवाद है। और लोग इसे पसंद करते हैं। यह बहुत बढ़िया है।

हम दृश्य रूप से देख सकते हैं कि बाइबल कैसी रही होगी। क्या यह बिल्कुल वैसी ही थी? नहीं। क्या यह इतनी करीब है कि हमें कम से कम इसका अंदाजा तो हो जाए? इसका कुछ उपयोग है।

और हम पवित्रशास्त्र संलग्नता सामग्री क्यों तैयार करते हैं? क्या आप द चॉसन देखकर बाइबल अध्ययन सिखा रहे हैं? नहीं। इसलिए नहीं कि हमारे पास यह है। हमारे पास यह इसलिए है क्योंकि यह सामग्री हमें आकर्षित करती है और संज्ञानात्मक मानसिक संबंध बनाती है, साथ ही आध्यात्मिक और भावनात्मक संबंध भी बनाती है।

हम द चॉसन जैसी चीजें देखने, गाने सुनने और किताबें पढ़ने से बाइबल की सामग्री की ओर आकर्षित होते हैं। इसका उद्देश्य हमें शास्त्रों और परमेश्वर के साथ अधिक से अधिक जोड़ना है। जरा उन गीतों के बारे में सोचिए जिन्हें हम चर्च में गाते हैं।

हम चर्च में गीत क्यों गाते हैं? क्योंकि यह आराधना का एक हिस्सा है। यह हमें परमेश्वर से जोड़ता है। इसलिए, पवित्रशास्त्र से जुड़ाव का पूरा क्षेत्र आज बाइबल अनुवाद आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि हमें सिर्फ उस पुस्तक से ज़्यादा की ज़रूरत है।

आप और मैं जब ईसाई बने, तो हमने अपने विश्वास में वृद्धि की। आपमें से कुछ लोगों ने बचपन में ही इसकी शुरुआत कर दी थी। मैंने ऐसा नहीं किया।

मैं वयस्क होने पर विश्वास में आया। लेकिन यह सब कहने का मतलब है कि हमें शास्त्रों से ज़्यादा की ज़रूरत है। और इसलिए, आज बाइबल अनुवाद में अलग-अलग सामग्री के साथ शास्त्रों का जुड़ाव शामिल है।

आगे बढ़ते हुए, मैं इस बारे में बात करना चाहूँगा कि एक अच्छा अनुवाद क्या होता है। हम एक अच्छे अनुवाद के चार गुणों के बारे में बात कर रहे हैं। सबसे पहले, एक अच्छा अनुवाद, और यह अब प्रिंट अनुवाद है।

यह पवित्रशास्त्र से जुड़ी सामग्री नहीं है। मुद्रित अनुवाद सटीक होना चाहिए। इसका अर्थ बाइबल के पाठ के अर्थ जैसा होना चाहिए।

हमारे पास इसे बदलने का अधिकार नहीं है। और इसलिए, जब हम सटीकता के अपने सिद्धांत को देखते हैं, तो हम पाठ में कुछ भी ऐसा नहीं जोड़ रहे हैं जो वहाँ नहीं होना चाहिए। हम कुछ भी नहीं हटा रहे हैं।

हम कुछ भी नहीं बदल रहे हैं। कुछ भी नहीं जोड़ा जा रहा है, कुछ भी नहीं बदला जा रहा है, और कुछ भी नहीं हटाया जा रहा है। तो, ये तीन चीजें हैं जिन पर हम नज़र रखते हैं।

दूसरी बात, यह सामान्य भाषा की तरह लगना चाहिए। यह अजीब नहीं लगना चाहिए। मैंने सुना है कि एक सेमिनरी में एक प्रोफेसर है जिसके दरवाजे पर योदा की तस्वीर है, और वह एक ग्रीक शिक्षक है, और पोस्टर पर लिखा है, योदा की बात ठीक है।

योदा की बात ठीक है। ग्रीक क्लास में योदा की बात ठीक है। जब आप ग्रीक की परीक्षा देते हैं और आपका प्रोफेसर जानना चाहता है कि क्या आपने वाकई ये सारे शब्द समझे हैं, तो योदा की बात ठीक है? और इसलिए आप स्टोर पर जाकर पूछते हैं, क्या उसने समझ लिया? कल्पना कीजिए कि अगर आपकी पूरी बाइबल इसी तरह लिखी गई होती।

यह बहुत जल्दी पुराना हो जाएगा। आप इसे सुनते-पढ़ते थक जाएँगे। बाइबल अनुवाद में, योदा की बात ठीक नहीं है।

यह सामान्य बात लगनी चाहिए। ऐसा लगना चाहिए कि लोग वाकई कुछ सावधानियों के साथ बात कर रहे हैं। लेकिन चलिए आगे बढ़ते हैं।

तो स्वाभाविक लगने वाली, सामान्य भाषा। दूसरी बात यह है कि इसे समझने योग्य होना चाहिए। इसलिए अगर मैं आपसे स्वाहिली में बात करता हूँ, तो मैं अचानक स्वाहिली में कूद जाता हूँ और बात करना शुरू कर देता हूँ।

तुम मुझे समझ नहीं सकते। सच में, मेरे लिए ऐसा करना बेकार है। इसका कोई मतलब नहीं है क्योंकि तुम समझ नहीं सकते।

क्या हमारा धर्मग्रंथ अच्छी तरह से संवाद करता है? क्या लोग इसे समझते हैं? और अगर वे नहीं समझते हैं, तो क्या हमने अनुवाद का अपना काम पूरा किया है? याद रखें, यह संचार है, और हम कुछ ही मिनटों में संचार के मुद्दे से निपटने जा रहे हैं। तो, क्या यह सटीक है? क्या यह स्वाभाविक है? क्या यह स्पष्ट है? आखिरी बात यह है कि क्या यह स्वीकार्य है। क्या यह वही है जिसकी लोग अपेक्षा कर रहे हैं? और इसके द्वारा, हम जानना चाहते हैं, क्या इन लोगों को हमारा अनुवाद पसंद आया है, ताकि वे इसे पढ़कर खुश हों? तंजानिया में, एक भाषा थी जिसका अनुवाद एक अलग एजेंसी, एक अलग बाइबिल द्वारा किया गया था। दक्षिणी तंजानिया में इस एक भाषा में एक अलग एजेंसी द्वारा अनुवादित बाइबिल।

वे सौ साल पहले किए गए अनुवाद को अपडेट करने की कोशिश कर रहे थे। पहला अनुवाद 1910 में किया गया था, और यह 90 के दशक के अंत में है, और वे इसका अपडेटेड संस्करण तैयार करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने वास्तव में जो किया वह नए सिरे से शुरू करना था।

और उन्होंने लगभग छह साल में पूरी बाइबल का अनुवाद कर दिया। और मैं उस भाषा समूह के चर्चों में गया हूँ, और मैंने उनसे पूछा, तो आपको वह बाइबल कैसी लगी? ओह, हमें वह पसंद नहीं आई। क्यों नहीं? आह, हमें तो बिल्कुल भी पसंद नहीं आई।

और मुझे कभी पता नहीं चला कि ऐसा क्यों हुआ। लेकिन मूल रूप से, उन्होंने कहा, हमें इसमें कुछ भी पसंद नहीं है, और हम इसका उपयोग नहीं कर रहे हैं। ठीक है? उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया, और आप जानते हैं कि उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे इसे खरीदते नहीं हैं, वे इसे खरीदते नहीं हैं, और वे इसका उपयोग नहीं करते हैं।

हम नहीं चाहते कि हमारी बाइबल गोदाम में किसी बक्से में बंद होकर पड़ी रहे। हम चाहते हैं कि हमारी बाइबल का इस्तेमाल किया जाए, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह स्वीकार्य हो। अब, ये चार गुण हैं जिन्हें हम अनुवाद प्रक्रिया करते समय हासिल करना चाहते हैं।

ये चार गुण भी हैं जिनका उपयोग हम प्रक्रिया के अंत में या कहें कि प्रक्रिया के अंत में इस अनुवाद का मूल्यांकन करने के लिए करते हैं। और इसलिए बाइबल अनुवाद की दुनिया में हम जो चीज़ें आम तौर पर अनुवाद में करते हैं, उनमें से एक है, मान लीजिए कि हमने किसी खास किताब का अनुवाद किया है, जैसे कि योना की किताब। फिर हम इसे निकालेंगे और लोगों के साथ पढ़ेंगे, और हम पूछेंगे, तो आपको क्या लगता है कि यह क्या कह रहा है? क्या आप इसे अपने शब्दों में बता सकते हैं? यह क्या कह रहा है? क्या इसमें कोई ऐसा शब्द है जो आपको नहीं पता था? हाँ, हमें नहीं पता था कि वह शब्द क्या था।

इसलिए, हम उनसे ये सवाल पूछते हैं ताकि हम कह सकें कि क्या यह स्वाभाविक लग रहा है? क्या यह स्पष्ट है? और क्या यह स्वीकार्य है? क्या आपको यह पसंद है? यह कुछ ऐसा है जिसे पढ़कर और इस्तेमाल करके आप खुश होंगे। इसलिए हम उन लक्ष्यों का उपयोग आगे की ओर करते हैं ताकि वे प्रक्रिया के अंत में मापदंड, माप उपकरण बन सकें। इसलिए, हमारा लक्ष्य तब ग्रहणशील भाषा में परमेश्वर के वचन की एक गुणवत्तापूर्ण प्रस्तुति तैयार करना है, जो लक्ष्य भाषा के समान है, जो ईसाई समुदाय की अपेक्षाओं के अनुरूप है।

ठीक है, आइए बाइबल अनुवाद में कुछ अन्य मुद्दों पर विस्तार से चर्चा करें। तो, बाइबल अनुवाद करते समय आपको कुछ अन्य बातों पर भी विचार करना चाहिए। और यह सवाल कि लोग किस शैली को चाहते हैं? हमेशा यह स्पष्ट नहीं होता कि वे किस शैली को चाहते हैं।

एक जगह, वे तंजानिया में इस भाषा में कुछ शोध कर रहे थे, और उन्होंने कहा, चलो स्वाहिली में बाइबल लेते हैं, और स्वाहिली में तीन अलग-अलग संस्करण हैं, और उन्होंने पहले संस्करण के बाद स्थानीय भाषा में शास्त्र के एक अंश का अनुवाद किया, जो अंग्रेजी से शाब्दिक स्वाहिली अनुवाद है। दूसरा अनुवाद मध्यम रूप से संचारात्मक था, और तीसरा अनुवाद अंग्रेजी में एक स्वतंत्र अनुवाद और स्वाहिली में एक स्वतंत्र अनुवाद जैसा था, और फिर उन्होंने तीन अलग-अलग स्थानीय भाषा के पैराग्राफ बनाए। एक शाब्दिक था, एक कम शाब्दिक था, और एक अधिक स्वतंत्र अनुवाद था।

और इसलिए, उन्होंने लोगों से पूछा कि वे किसको सबसे बेहतर समझ सकते हैं? और उन्होंने कहा, अच्छा, तीसरा। उन्होंने पूछा कि उन्हें कौन सा सबसे अच्छा लगा। और उन्होंने कहा, शाब्दिक। और उन्होंने कहा, अच्छा, यह दिलचस्प है।

ऐसा क्यों है? और उन्होंने कहा, ठीक है, जब हम चर्च में बैठते हैं, तो वे हमें स्वाहिली में बाइबल पढ़ते हैं, और हम इसे बिल्कुल भी नहीं समझ पाते। और इसलिए, हमने सोचा कि यह ऐसा ही होना चाहिए। उन्होंने मान लिया कि बाइबल को अस्पष्ट होना चाहिए और संवाद नहीं करना चाहिए।

तो ऐसी स्थिति में आप क्या करते हैं? और ऐसा तब होता है जब हम ऐसी स्थिति में होते हैं जहाँ हमें यकीन नहीं होता कि लोग क्या चाहते हैं। हम अनुवाद प्रक्रिया शुरू करते हैं, और शायद हम कुछ ऐसा बनाते हैं जो ज़्यादा शाब्दिक और ज़्यादा संचारी हो और कहें, आपके लोगों के लिए कौन सा सबसे ज़्यादा उपयुक्त है? आपके ईसाई समुदाय के लिए कौन सा सबसे ज़्यादा उपयुक्त है ? और फिर वे कहने लगते हैं, ठीक है, हालाँकि हम समझते हैं कि पहला वाला क्या कह रहा है, लेकिन दूसरा वाला हमारी ज़रूरतों को बेहतर तरीके से पूरा करता है। दक्षिणी तंजानिया में, हम दो भाषाओं में काम कर रहे थे।

एक थी सांगु भाषा, और दूसरी थी वांगजी भाषा। सांगु लोगों के पास चर्च बहुत लंबे समय से नहीं था। चर्च सिर्फ 20 साल पुराना था, और उस समूह में बहुत से लोग अभी भी ईसाई नहीं थे।

और इसलिए, उन्होंने कहा, हम अपने लोगों के लिए एक ऐसा अनुवाद चाहते हैं जो थोड़ा ज़्यादा संवादात्मक हो, ताकि हम उन्हें ऐसी भाषा में आकर्षित कर सकें जिससे वे परिचित हों और जिससे उन्हें धर्मग्रंथों को समझने में कम बाधाएँ हों। दूसरी ओर, वांगजी लोगों के पास 70, 80, यहाँ तक कि 100 साल तक चर्च था। लोग धर्मग्रंथों से अच्छी तरह वाकिफ़ थे।

वे स्वाहिली बाइबिल से परिचित थे, और उन्होंने कहा कि अगर यह स्वाहिली के थोड़ा करीब है, तो हमें कोई आपत्ति नहीं है, जिसे हम जानते हैं कि अंग्रेजी के शाब्दिक संस्करण के करीब है। और इसलिए दो अलग-अलग लोगों के लिए दो अलग-अलग अनुवाद दो अलग-अलग लोगों के समूहों के लिए, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे क्या चाहते हैं। एक और बात जो हमें हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए, वह यह है कि क्या मौजूदा प्रमुख भाषा में कोई बाइबिल है? तंजानिया, पूर्वी अफ्रीका में, वह भाषा स्वाहिली है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है? यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि लोग अनुवाद की तुलना मौजूदा बाइबल से करेंगे। और अगर वे कहते हैं, ओह, यह उस बाइबल से बहुत अलग है जिसे हम जानते और पसंद करते हैं, तो वे इसी कारण से इसे अस्वीकार कर सकते हैं। फिर से, स्वीकार्यता का यह विचार यहाँ काम आ रहा है।

तो, जब आप अनुवाद कर रहे हैं, तो आप उस बाइबल से कितनी समानता रखते हैं जिससे लोग परिचित हैं? और यह चलन अमेरिका में 1950 के दशक में किंग जेम्स बाइबल के साथ था। आप किंग जेम्स बाइबल को बदल नहीं सकते। यह परमेश्वर का वचन है।

लेकिन फिर लोगों ने कहा, हाँ, लेकिन हम वास्तव में किंग जेम्स को नहीं समझते हैं। तो वहाँ एक मुद्दा था। तो, क्या कोई मौजूदा बाइबल है और क्या उस मौजूदा बाइबल का इतना सम्मान है कि फिर किसी तरह से उस तरीके को प्रभावित करता है जिससे आपको अनुवाद करने की ज़रूरत है? एक और बात जो हम ध्यान में रखते हैं वह यह है कि क्या कोई दूसरा प्रमुख धर्म है जो उस देश में प्रमुख है। यह इस्लाम हो सकता है।

यह बौद्ध धर्म हो सकता है। यह हिंदू धर्म हो सकता है। और इन प्रमुख धर्मों में अक्सर धार्मिक साहित्य का एक बड़ा संग्रह होता है।

वह धार्मिक साहित्य शायद आम आदमी के लिए पढ़ने लायक भी न हो, लेकिन यह उच्च साहित्यिक स्तर है, भाषा का उच्च मानक है, और यहाँ तक कि विशिष्ट शब्द भी धार्मिक शब्द हैं। और इसलिए वे इस उच्च स्तर की किसी चीज़ की अपेक्षा कर रहे हैं। और अगर आप उस स्तर की कोई चीज़ नहीं बनाते हैं, तो इसका बहुत बड़ा प्रभाव हो सकता है।

मेरे एक सहकर्मी मध्य एशिया में इस एक देश में काम कर रहे थे, और वह भाषा ए में काम कर रहे थे। भाषा बी में, बाइबल एक अलग बाइबल एजेंसी द्वारा लिखी गई थी, न कि विक्लिफ़ द्वारा। और उन्होंने अर्ध-आधारित अनुवाद किया। इसलिए, उन्होंने पूरी बाइबल पूरी कर दी, और समुदाय के लोगों ने कहा, हमें यह पसंद नहीं है।

यह बच्चों के लिए लिखा गया है। हम बच्चे नहीं हैं। यह बहुत स्पष्ट है।

धार्मिक पुस्तक को ऐसा नहीं दिखना चाहिए। और इसलिए, वे अनुवादित पुस्तक के बक्से को इस बाइबल एजेंसी के कार्यालय में ले गए, उन्हें ढेर कर दिया, और उन्हें आग लगा दी। उन्होंने उन्हें जला दिया।

और मेरा मित्र अपने अनुवाद दल से बात कर रहा था, जो ईसाई उसके साथ अनुवाद कर रहे थे, और उन्होंने कहा, हम नहीं चाहते कि हमारी बाइबल जला दी जाए। इस उच्च भाषा और समझ के बीच पुल बनाने में हमारी मदद करें। और कभी-कभी इसे फिर से लिखने और इसे पूरी तरह से अलग बनाने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं होता है, क्योंकि भाषा की यही ज़रूरत होती है, इसे कुछ ऐसा बनाने के लिए जो कम से कम कुछ अर्थपूर्ण हो।

इसलिए, हम इससे जूझ रहे हैं। हमें वह संतुलन खोजना होगा। हमें वह मध्य मार्ग, वह सुखद माध्यम खोजना होगा।

इसलिए, जब हम अनुवाद कर रहे होते हैं तो हम इन सभी बातों को ध्यान में रखते हैं। एक और बात जो हम ध्यान में रखते हैं, वह है, लक्षित दर्शक कौन हैं? आप इसे किसके लिए लिख रहे हैं? और आप इसे किसके लिए लिख रहे हैं, यह तय करता है कि हम चीजों को कैसे शब्दबद्ध करते हैं। इसलिए, अगर आप इस बारे में सोचें कि हर लिखित पाठ में एक निश्चित आवाज़ होती है, तो आप जो कुछ भी लिखते हैं, उसमें एक आवाज़ होती है।

लेखक की अपनी आवाज़ होती है जिसे वे अपने लिखे हुए पाठ में डालते हैं। तो हमारा लक्ष्य क्या है, और लक्षित दर्शक कौन हैं? कोई सार्वभौमिक लक्षित दर्शक नहीं है। यह प्रत्येक व्यक्तिगत समुदाय पर निर्भर करता है।

एक सामान्य नियम के रूप में, एक सामान्य सिद्धांत के रूप में, आम तौर पर, हम उन वयस्कों के लिए लिखने की कोशिश कर रहे हैं जो 25 से 45 वर्ष की आयु के बीच हैं। यदि आप 45 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की पुरानी भाषा को बनाए रखने की कोशिश करते हैं, तो आपको कुछ ऐसा मिलेगा जिसे पढ़ना मुश्किल होगा; हो सकता है कि लोगों को शब्दावली न पता हो, और वे इसे नहीं पढ़ेंगे। यदि यह बहुत सरल है, तो 20 और 30 के दशक के लोग कहेंगे कि यह बच्चों के लिए है। हमें यह पसंद नहीं है।

और इसलिए, 25 वर्ष की आयु तक एक व्यक्ति मूल रूप से वयस्क हो जाता है, और अक्सर विवाहित होता है, अक्सर बच्चों के साथ। और इसलिए संज्ञानात्मक प्रक्रिया उनके दिमाग में जम गई है, और वे अधिकांश वयस्कों के स्तर पर भाषा समझते हैं। और इसलिए हम 25 से 45 वर्ष की आयु के उस मधुर स्थान को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

तो, संस्कृति के भीतर, हमारा लक्षित दर्शक कौन है? क्या यह गैर-ईसाई हैं? क्या यह सभी लोग हैं? क्या यह ईसाई हैं? फिर से, हम यह नहीं कह सकते कि सार्वभौमिक रूप से यह ऐसा या वैसा होना चाहिए। लेकिन आम तौर पर, यह चर्च के लोगों के लिए है। परमेश्वर ने अब्राहम और अब्राहम के लोगों से बात की।

परमेश्वर ने मूसा से बात की और मूसा को मूसा और लोगों के लिए व्यवस्था दी। और इसलिए बाइबल हमेशा से चर्च के लिए कुछ रही है। अब, परमेश्वर ने बाइबल को पलिशितियों को नहीं दिया, या उसने बाइबल को पलिशितियों और एमोरियों और यबूसियों और इन सभी अन्य लोगों को नहीं दिया, है न? नहीं।

उन्होंने इसे ईसाई, विश्वास करने वाले समुदाय को दिया। इसलिए, पुराने नियम में, वे ईसाई नहीं थे, लेकिन हम कह सकते हैं कि वे विश्वास करने वाले समुदाय थे। और इसलिए आम तौर पर, बाइबल का अनुवाद विश्वास करने वाले समुदाय के लिए किया जाता है।

क्या ऐसी जगह के बारे में जहाँ कभी धर्मग्रंथ नहीं रहे? मैंने उनमें से एक में काम किया है। उस स्थिति में हम किसके लिए अनुवाद करते हैं? हम ईसाई धर्म मानने वाले लोगों या उन लोगों के लिए अनुवाद करते हैं जो मसीह में विश्वास करने लगेंगे। और एक मिशनरी के रूप में मिशनरी दृष्टिकोण से, और कॉलेज में मिशनरी के रूप में मेरे प्रशिक्षण से, स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर, हम लोगों के आधार पर संदेश नहीं बदलते हैं ताकि हम उन्हें जीत सकें।

हम संदेश को उसी तरह रखते हैं जिस तरह से वह धर्मग्रंथों में है, और हम धर्मग्रंथों की अखंडता को बनाए रखते हैं जबकि उसी समय सुसमाचार की सच्चाई को भी संप्रेषित करते हैं। क्या सुसमाचार अपमानजनक होगा? हाँ। क्या यीशु के शब्द उनके समय के लोगों के लिए अपमानजनक थे? हाँ।

क्या यह सच था? हाँ। हम इस संतुलन को कैसे बनाए रखते हैं? यह बात ध्यान में रखने लायक है। लेकिन आम तौर पर, हम इसका अनुवाद ईसाई विश्वासी समुदाय या ऐसे लोगों के लिए करते हैं जो भविष्य में चर्च बनेंगे।

फुटनोट जैसी चीज़ों के बारे में क्या? क्रॉस-रेफ़रेंस जैसी चीज़ों के बारे में क्या? पुस्तक परिचय जैसी चीज़ों के बारे में क्या? शब्दावलियों के बारे में क्या? हम उन सभी चीज़ों को पाठ्य के विपरीत पैराटेक्स्टुअल सामग्री कहते हैं। क्या हमें उन्हें भी शामिल करना चाहिए, और हमें उन्हें क्यों शामिल करना चाहिए? अक्सर, इन विभिन्न भाषा समूहों के पादरी स्वाहिली जैसी भाषा में काम कर रहे हैं, और तंजानिया के पादरियों से हमने पाया कि वे स्वाहिली का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन यह वास्तव में उनके दिलों को नहीं छूता है। यह वास्तव में उतना गहरा प्रभाव नहीं डालता है।

लेकिन फिर जब हम उनकी भाषा में अनुवाद प्रदान करते हैं, और हम फुटनोट्स और क्रॉस-रेफ़रेंस और शब्दावली और परिचय शामिल करते हैं, तो वे वहाँ बैठते हैं और कहते हैं, मुझे कभी नहीं पता था कि यह सब बाइबल में था। यह बहुत बढ़िया है। और शायद बेंच पर बैठे लोग इसे पढ़ने के लिए समय नहीं निकालते।

तो हम क्या कर रहे हैं? हम पादरियों को धर्मग्रंथों की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए धर्मग्रंथ उपलब्ध करा रहे हैं, जो तब इस बात से संबंधित है कि वे किस तरह से मंच पर संवाद करते हैं और उनके उपदेश और उनके संदेश, और पादरी हमें बता रहे हैं, यह बहुत बढ़िया है। मेरा

उपदेश अभी-अभी शुरू हुआ है, और अब इसका प्रभाव बहुत अधिक है क्योंकि मुझे धर्मग्रंथों की अधिक समझ है। और इसलिए कुछ स्थानों पर, निश्चित रूप से, हम आम लोगों से बात करना चाहते थे, लेकिन जो व्यक्ति सबसे पहले इसका सबसे अधिक उपयोग करता है, वह पादरी हो सकता है।

और इसलिए, हम उस संबंध में पादरियों के लिए अनुवाद कर रहे हैं। इसलिए, हमें यह सब संतुलन में रखना होगा। और फिर, कोई एक आकार सभी के लिए उपयुक्त नहीं है।

ऐसा कोई एक तरीका नहीं है जो हर संदर्भ में ऐसा ही हो। यह सिर्फ़ इस बात पर निर्भर करता है कि आप किसके लिए अनुवाद कर रहे हैं, किसके साथ अनुवाद कर रहे हैं, ईसाई समुदाय क्या है, और फिर, पूरा सवाल यह है कि वे क्या चाहते हैं? ठीक है, तो अंतरभाषाई के बारे में बात करते हैं। अंतरभाषाई।

आप इसे अलग तरीके से कहें, है न? यह आसान है। ठीक है? चलिए शुरू करते हैं। तो हमारे पास ये वाक्य हैं।

ये ऐसे वाक्य हैं जो किसी मेडिकल व्यक्ति द्वारा कहे जा सकते हैं। और मान लीजिए कि आप एक मौखिक दुभाषिया हैं, और जिस व्यक्ति के लिए आप अनुवाद कर रहे हैं वह एक आठ वर्षीय अमेरिकी बच्चा है। ठीक है? तो, मेडिकल व्यक्ति प्रत्येक वाक्य बोलता है, और फिर आपको उस वाक्य को एक पल में फिर से लिखना होता है और सिर्फ़ एक वाक्य बोलना होता है, कोई स्पष्टीकरण नहीं।

आप एक पैराग्राफ नहीं लिख सकते। बच्चे के लिए उस वाक्य को अलग तरीके से बोलें। ठीक है? तो अगर हम एक बार फिर से वाक्यों को देखें, तो पहले वाक्य के बारे में क्या? आपका डॉक्टर आपको कम वसा वाला आहार लेने की सलाह देता है।

आप इसे कैसे कहेंगे? आठ साल के बच्चे के लिए क्या समझना मुश्किल हो सकता है? एक क्रिया होगी अनुसरण करना। आम तौर पर, आप अपने सामने मौजूद किसी व्यक्ति या किसी चीज़ का अनुसरण करते हैं। या आप निर्देशों का पालन करते हैं।

लेकिन आहार का पालन करना इसे कहने का एक अजीब तरीका है। सुझाव देता है, बच्चा इसे समझ सकता है। सुझाव देता है, या चाहता है, वह चाहता है कि आप भी ऐसा करें, या जो भी हो।

ठीक है? या फिर वह चाहती है कि आप ऐसा करें। बढ़िया। तो, इसके बाद, आपको एक अलग शब्द का इस्तेमाल करना होगा।

कम वसा वाला आहार। वैसे, यह वाक्यों का एक वास्तविक सेट है जो मैं अपने छात्रों को देता हूँ, और यह आश्चर्यजनक है कि यह कितना कठिन है। इसलिए वे कहते हैं, ओह, आपको अधिक फल और सब्जियाँ खाने की ज़रूरत है।

बढ़िया। कितने लोग आपके हाथ ऊपर उठाकर आपकी सब्जियों पर ढेर सारा मक्खन डालते हैं? हाँ। क्या यह कम वसा वाला आहार है? नहीं, ऐसा नहीं है।

ठीक है? या आपके पास एक पुलाव है जो बढ़िया, रसीले, तैलीय पदार्थों से भरा हुआ है, और इसमें बहुत सारी सब्जियाँ हैं, लेकिन यह कम वसा वाला नहीं है। हमें इसमें क्या मूल अर्थ बताना है? और इसलिए हमारे पास एक शब्द है, अनुसरण करें, यह एक चुनौती है। हमारे पास कम वसा वाला शब्द है, यह एक चुनौती है।

तो चलिए, हम इसे खाने के शब्द से बदल सकते हैं। आपकी बेटी सुझाव देती है, आपका डॉक्टर सुझाव देता है कि आप खाएं, क्या? कम वसा वाला आहार। यह वास्तव में अमूर्त है।

आप क्या खाते हैं? हम खाना खाते हैं। ठीक है? यह खाना कैसा होना चाहिए? ऐसा खाना जिसमें ज्यादा चर्बी न हो। क्या यह कम चर्बी वाला आहार है? शायद हम एक वाक्य में इस बारे में इतना ही कह सकते हैं।

ठीक है। नंबर चार के बारे में क्या? एलर्जी के कुछ लक्षणों में खुजली वाली आँखें, बहती नाक और छींकना शामिल हैं। अब, क्या मेडिकल व्यक्ति ने कहा कि रोगी को ये सब चीज़ें थीं? नहीं, यह एक विवरण है, है न? तो एलर्जी के लक्षण एक मुद्दा है, मुद्दा शामिल है।

और इसलिए, एलर्जी के लक्षण अमूर्त हैं, लेकिन हमें उन्हें बच्चों के लिए थोड़ा और ठोस बनाने की ज़रूरत है। और इसलिए हम कुछ ऐसा कह सकते हैं, अगर किसी व्यक्ति को किसी चीज़ से एलर्जी है, और फिर हम वहाँ से आगे बढ़ते हैं, तो उनकी आँखों में खुजली हो सकती है, उनकी नाक बह सकती है, और उन्हें छींक आ सकती है, या छींकने का अनुभव हो सकता है। और इसलिए हम वही बात कह रहे हैं, हम इसे एक अलग तरीके से कह रहे हैं, और हम इसे ऐसे शब्दों में पेश कर रहे हैं जिसे एक बच्चा समझ सके।

यहां तक कि नंबर तीन भी, बहुत सरल लगता है, ये बूंदें कुछ घंटों के लिए धुंधली दृष्टि का कारण बनेंगी। ये बूंदें जो हम आपकी आँखों में एक सेकंड में डालने जा रहे हैं, आपको धुंधला दिखाई देगा। फिर से, धुंधली दृष्टि अमूर्त है, आप धुंधला देखेंगे, या उसका कोई रूप, एक बच्चे के लिए अधिक समझ में आता है।

धुंधली दृष्टि का मतलब है, हम किसकी दृष्टि की बात कर रहे हैं? या फिर एक बच्चे के साथ भी, मैं दृष्टि शब्द को समझता हूँ। और इसलिए, फिर से, हम किस बात को ध्यान में रखते हैं? लक्षित दर्शक? हम इस बात को ध्यान में रखते हैं कि उन्हें क्या चाहिए? हम इस बात को ध्यान में रखते हैं कि हम उनसे सबसे बेहतर तरीके से कैसे संवाद कर सकते हैं? हम इसे समझने योग्य तरीके से कैसे कह सकते हैं? क्या यह केवल एलर्जी के लक्षणों जैसी जानकारी है, या यह कम वसा वाले आहार का पालन करने जैसा निर्देश है? ये दोनों अलग-अलग हैं। उनमें से एक प्रोत्साहन है, जो एक आदेश या कम से कम एक उपदेश हो सकता है।

और दूसरा है सीधी-सादी जानकारी। और इसलिए हम अलग-अलग तरीके से संवाद करते हैं, इस आधार पर कि हम पहली जगह में संवाद क्यों कर रहे हैं। इसलिए, समीक्षा के माध्यम से,

एक अनुवाद अर्थ को स्थानांतरित कर रहा है, एक स्रोत पाठ के अर्थ और कार्य को उसके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में एक लक्ष्य पाठ में स्थानांतरित कर रहा है, जिसका समतुल्य, जितना संभव हो सके, समतुल्य अर्थ और कार्य है।

इसीलिए हमने उन चिकित्सा वाक्यों के साथ कार्य के बारे में बात की। लक्ष्य भाषा के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में समतुल्य अर्थ और कार्य। और फिर, अनुवाद के तीन प्रकार।

अंतरभाषिक, दो भाषाओं के बीच। अंतरभाषिक, एक भाषा के भीतर। और अंतर-लाक्षणिक शास्त्र संलग्नता उपकरण।

धन्यवाद।

यह डॉ. जॉर्ज पेटन द्वारा बाइबल अनुवाद पर दिया गया शिक्षण है। यह सत्र 2 है, बाइबल अनुवाद का परिचय, भाग 2।